ISSN: 2348-3083
SJIF 2016 : 4.44
UGC APPROVED SR. NO. 48612
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR
HUMANITY SCIENCE & ENGLISH LANGUAGE

डॉ भीमराव अंबेडकर जी

Dr. Babita
Assistant Professor, K R Girls Girls PG College, Mathura(UP)

***Scholarly Research Journal's* is licensed Based on a work at www.srjis.com**

1891 में भारत की धरती पर एक ऐसे विलक्षण महान व्यक्ति का जन्म हुआ जो दलितों के शक्तिशाली नेता साबित हुए वह एक महान लेखक, सिद्धांत शास्त्री और धर्म के गहन विचारक, शिक्षा, न्याय और अर्थ के प्रसिद्ध विद्वान थे वह बौद्धिक प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे उन्होंने छुआछूत और भेदभाव की समस्या को भारतीय समाज से उखाड़ फेंकने का बीड़ा उठाया था, बड़े पद पर होते हुए भी उन्होंने छुआछूत और भेदभाव की असहनीय पीड़ा सही और कसम खाई कि वह हिंदुस्तान से भेदभाव की खाई और छुआछूत के कलंक को मिटा कर रहेंगे, उन्होंने महसूस किया कि जब तक देश के संविधान और कानून में दलितों के लिए न्याय, समानता और उन्नति के प्रावधान नहीं किए जाएंगे तब तक दलित अपनी स्थिति सुधार नहीं कर पाएंगे उन्होंने महसूस किया कि शिक्षा ही वह ताकतवर हथियार है जो प्रत्येक दलित को सशक्त बना सकती है इसलिए पहले उस असीम क्षमता के धनी व्यक्ति ने अपने आप को शिक्षा और ज्ञान से भरपूर बनाया, उसके बाद दलितों को समानता, न्याय और अधिकार दिलाने के पक्ष में सशक्त आवाज उठाई और एक गरीब और अपेक्षित वर्ग से उठा वह साधारण इंसान एक दिन देश के लाखों करोड़ दलित के दिल की धड़कन और उसका मसीहा बन गया.

133 साल पहले जब हमारा भारत देश अंग्रेजों का गुलाम था तथा देश के लोग ब्रिटिश साम्राज्यवाद की पीड़ा भुगत रहे थे तब अंग्रेज लोग तो भारतीयों पर जुल्म करते ही थे लेकिन भारत के ऊंची जाति के स्वर्ण लोग भी अछूत या निम्न वर्ग के लोगों को घृणा की दृष्टि से देखते थे अछूतजनो को उनके मंदिरों और नल से पानी भी नहीं ले सकते थे उन्हें छूना तो बहुत बड़ा पाप समझते थे, छुआछूत और असमानता के ऐसे युग में मध्य प्रदेश के महू नामक स्थान में एक ऐसे महामानव का जन्म हुआ जो दलित वर्ग के लिए मुक्ति दाता साबित हुआ और उनके महान कार्यों के कारण दलित समाज के लोग उन्हें भगवान मानकर पूजने लगे

उस महापुरुष का नाम डॉक्टर भीमराव अंबेडकर था जिनका जन्म 14 अप्रैल 1891 को हुआ था वे अपने माता-पिता की 14वी संतान थे लेकिन उनके अधिकांश भाई-बहन कुछ समय तक जीने के बाद मर गए थे उनके पिता का नाम रामजी राव और मां का नाम भीमा बाई था, कहने को तो उनके पिताजी मिलिट्री में सूबेदार थे लेकिन उन्हें वेतन बहुत कम मिलता था 15 साल की नौकरी करने के बाद जब वह रिटायर हुए तो उन्हें अपने गांव महुआ मैं जाकर रहना पड़ा और अपने बच्चों की परवरिश और पढ़ाई लिखाई की चिंता हुई लेकिन उनके पास ना तो पढ़ाई लिखाई के लिए पैसे थे और ना ही गांव के बच्चों के लिए स्कूल की सुविधा थी इसके चलते रामजी राव ने अपना गांव छोड़कर सतारा शहर जाने का निर्णय लिया 5 वर्ष की आयु में भीमराव ने पढ़ने की इच्छा जाहिर की लेकिन माता-पिता दोनों को चिंता हुई कि हम तों महार जाति के अछूत लोग हैं हम अपने बेटे को कैसे स्कूल भेजें परंतु बच्चे की जिद के आगे दोनों हार गए और उसे बहुत से स्कूलों में ले गए जहां पर स्कूल के संचालक और हेड मास्टरों ने उन्हें प्रवेश देने से मना कर दिया क्योंकि वह महार जाति के थे परंतु एक स्कूल के हेड मास्टर उनको प्रवेश देने के लिए राजी हो गए क्योंकि भीमराव प्रतिभा के धनी थे वह भी एक शर्त पर की यह कमरे के बाहर बैठकर ही कक्षा लगाएंगे जहां पर दूसरे छात्रों के चप्पल और जूते उतरते थे भीम को इससे भी कोई शिकायत नहीं थी वह समय से पहले ही पहुंच जाते और अपनी कक्षा के बाहर दरवाजे पर

बैठकर शिक्षकों द्वारा पढ़ाए जाने वाले पाठ कों बड़े ध्यान से एकाग्रतापूर्वक सुना करते थे पाठ से संबंधित शिक्षक कोई भी सवाल करते थे तो वह तुरंत उसका जवाब देते थे एक दिन गणित के अध्यापक ने एक प्रश्न ब्लैक बोर्ड पर लिखा और कक्षा में कोई भी नहीं बता पाया उसी समय भीमराव को कहां गया कि तुम ब्लैक बोर्ड पर आकर यह सवाल हल करो, भीमराव बड़े ही गर्व के साथ उठकर कक्षा के भीतर जैसे ही ब्लैक बोर्ड की ओर गया तो सभी कक्षा के बच्चे चिल्लाने लगे कि हमारा वहां पर खाने का टिफिन रखा है और भीमराव के यहां आने से वह सब पवित्र हो जाएगा , अध्यापक ने उसे वापस भेज दिया.

दूसरा वाक्य एक दिन उसे बहुत प्यास लगी थी तो उसने वहां पर रखी बाल्टी से पानी पी लिया वहां पर खड़े सभी बच्चों ने उसे अपवित्र कहकर टीचर से पिटाई करवाई. तीसरा वाक्य एक दिन उसे रिक्शे की सवारी करने की इच्छा हुई तो उसने रिक्शे वाले को रोक कर कहा कि मुझे मेरे घर पर छोड़ दो रिक्शा वाले ने उसे बिठा लिया और जब वह रास्ते में जा रहा था तो उसने पूछा कि तुम्हारी जाति क्या है तो भीमराव ने कहा मैं माहर जाति का हूं तुरंत रिक्शा वाले ने उसे नीचे उतारा और उसे सजा के रूप में कहा कि अब मैं रिक्शे पर बैठूंगा और तुम रिक्शा चला कर मुझे लेकर चलोगे भीमराव ने महसूस किया कि शहर के ऊंची जाति के लोग उनकी आवाज सुनकर अपवित्र कैसे हो जाते हैं.

भीमराव अंबेडकर ने छुआछूत और भेदभाव की जो पीड़ा सही वह उनके जीवन के लिए अभिशाप ना बनाकर आगे चलकर वरदान साबित हुई इसी पीड़ा ने उनको अन्य और कुरीतियों से लड़ने की ताकत दी भीमराव ने स्कूल में एक-एक करके हर एक कक्षाएं अच्छे नंबरों से पास की गणित और भूगोल और अन्य विषयों में बहुत होशियार थे एक बार उन्होंने संस्कृत पढ़ने की इच्छा जाहिर की लेकिन अध्यापक ने उन्हें संस्कृत पढ़ने से मना कर दिया बोला की संस्कृत तो उच्च जाति के लोग पढ़ते हैं तू अछूत है तेरे भाग्य में संस्कृत पढ़ना नहीं है

भीमराव ने हाई स्कूल की परीक्षा प्रथम श्रेणी से पास की अब और आगे पढ़ना चाहते थे लेकिन उनके पास पैसे नहीं थे कॉलेज में दाखिला लेना चाहते थे लेकिन फिर बड़ोदरा के महाराजा गायकवाड़ ने उनकी सहायता की भीमराव को पता चला कि राजा गरीब बच्चों की मदद करते हैं वह उनसे मिलने के लिए मुंबई स्थित उनकी कोठी पर गए जब महाराज को पता चला कि भीमराव गरीब छात्र होकर भी फर्स्ट डिवीजन से हाई स्कूल किया है तो वह भीमराव की सहायता करने के लिए तैयार हो गए भीमराव ने उन्हें बताया कि मुझे ऊंची से ऊंची डिग्री प्राप्त करनी है तो तुरंत राजा ने उन्हें ₹100 दिए और हर महीने ₹25 की छात्रवृत्ति देने का वादा किया भीमराव ने मुंबई के कॉलेज में एडमिशन ले लिया और अच्छे अंको से परीक्षा पास करते हैं, इसके साथ ही उनका विवाह रमाबाई के साथ कर दिया गया बड़ौदा महाराज की आर्थिक मदद से उसे शिक्षा प्राप्त करने के लिए वह अमेरिका चले गए वहां की कोलंबिया यूनिवर्सिटी में दाखिला ले लिया जहां से उन्हें पॉलिटिकल साइंस मिलिट्री सोशियोलॉजी और इकोनॉमिक्स का गहन अध्ययन किया अमेरिका देश उन्हें इसलिए पसंद आया कि वहां के सभी लोग आजाद ख्याल वाले थे और तरक्की पसंद थे छुआछूत और भेदभाव की संकरण विचारधारा से परे थे अमेरिका की यूनिवर्सिटी से अच्छे अंक प्राप्त करने के बाद वे लंदन चले गए जहां पर उन्हें लंदन स्कूल आफ इकोनॉमिक्स में दाखिला ले लिया एमएससी करने के बाद फिर उन्हें ला की पढ़ाई की डिग्री के बाद उन्होंने अपने मूल विषय पर थीसिस लिखी यह वही किताब थी जिसके आधार पर आगे चलकर **रिजर्व बैंक आफ इंडिया** को बनाया गया प्रथम श्रेणी में लंदन से कानून की डिग्री लेकर और डॉक्टर की उपाधि लेकर भीमराव वापस अपने देश भारत चले आए और महाराजा गायकवाड से किया गया अपना वादे के मुताबिक बड़ौदा में नौकरी करने लगे भले ही भीमराव अंबेडकर और इंग्लैंड से ऊंची शिक्षा की बड़ी-बड़ी डिग्री हासिल कर ली थी लेकिन अछूत जाति का होने के कारण स्वर्ण आज भी उनसे नफरत करते थे भीमराव ने देखा कि दफ्तर के लोग मुझसे नफरत करते हैं कोई मुझे हाथ मिलाना नहीं चाहता और मुझे पानी पिलाने से कतराते हैं कर्मचारी की बात तो छोड़िए एक फोर्थ क्लास चपरासी भी भीमराव से अत्यंत घृणा करता था दफ्तर की फाइल उनके हाथ में देने की बजाय दूर से मेजा पर पटक कर चला जाता था यह सब देखकर भीमराव का हृदय बहुत दुखी होता था मैं सोचता था कि मेरे इतनी पढ़ाई लिखाई करने के बाद भी आंखिर क्या हुआ, सोचा था कि मेरे पढ़ लिख जाने से लोग मुझे इज्जत देंगे, मान सम्मान देंगे, मेरे विचारों को समझेंगे लेकिन इतनी सारी डिग्रियां अपनाने का भी कोई लाभ नहीं हुआ ऊंची जाति के लोग आज भी मुझे इस नजर से देखते हैं जिस नजर से वह मुझे पहले बचपन में देखा करते थे यहां तक कि उन्हें पानी भी अपने घर से ही लाना पड़ता था, अपने पिता की तरह जिंदगी के अनेक दर्द कष्ट सहे उनकी धर्मपत्नी रमाबाई ने एक-के-बाद-एक पांच संतानों को जन्म दिया लेकिन इलाज की सुविधा न मिलने के कारण संताने एक-एक करके मृत्यु को प्राप्त हुई केवल एक संतान शेष बची जिसका नाम था

यशवंतराव, उनकी पत्नी रमाबाई की तबीयत भी खराब रहने लगी और लंबी बीमारी का कष्ट झेलते हुए उन्हें भी अपनी जान से हाथ धोना पड़ा, पत्नी और बच्चों के निधन ने भीमराव को भयंकर मानसीक अगात पहुंचा, यदि उनके स्थान पर कोई और होता तो इतना सब सह कर टूट जाता लेकिन बाबा साहब ने हार और रुकना नहीं सीखा था, अपनी कठिन मेहनत और लगन से कामयाबी पा गए और जीवन के दुख दर्द, अपनों से बिछड़ने का कष्ट सहकर भी उन्होंने देश की सेवा करने का रास्ता नहीं छोड़ा

गांधी जी के सत्य और अहिंसा के सिद्धांत से प्रेरणा लेकर सत्याग्रह के रास्ते पर चल पड़े सन 1926 में सत्याग्रह अपनाते हुए उन्होंने प्रण किया कि मैं सब दलितों को गांव के तालाब और कुएं से पानी पीने का और मंदिरों में प्रवेश कर भगवान के दर्शन करने का अधिकार दिलाकर रहूंगा और एक दिन सैकड़ो दलितों के साथ उन्होंने तालाब से पानी पिया और वीरेश्वर मंदिर में प्रवेश करके भगवान की मूर्ति के दर्शन किए, उस समय दलित महिलाओं को अपनी (धोती) साड़ी को अपने घुटने तक रखना होता था बाबा साहब के निडरता, बहादुर और दृढ़ निश्चय के कारण ही महिलाओं को अपनी धोती से अपने पैरों को ढकने का अधिकार दिया

बाबा साहब चाहते थे कि हमारे दलित कम्युनिटी के आधार पर हमें मतदान का अधिकार मिले गांधी जी ने भीमराव की इस बात का विरोध किया गांधी जी सर्वधर्म समभाव में विश्वास करते थे उनका कहना था कि लोगों को धर्म और जाति के आधार पर किसी भी प्रकार से भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए.

लंदन में जब दूसरा गोलमेज सम्मेलन हुआ तो भीमराव संबंधीय सम्मेलन में भाग लेने गए और उन्होंने ब्रिटेन के किंग जॉर्ज पंचम के सामने अछूतों की समस्या की बात उठाई फिर दूसरे सम्मेलन में उन्होंने आग्रह किया कि अछूतों के लिए निर्वाचन क्षेत्र अलग होना चाहिए गांधी जी उनकी इस बात से तैयार नहीं हुए और उन्होंने कहा कि तुम हिंदू धर्म को बांट रहे हो

इंग्लैंड के किंग जॉर्ज पंचम ने गांधी जी की आपत्ति की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया उन्होंने अंबेडकर की सभी शर्तें स्वीकार करते हुए कहा भारत के अछूतों को अलग निर्वाचन क्षेत्र के द्वारा आरक्षण दिया जाता है गांधी जी किसी भी प्रकार से अछूत को अलग से आरक्षण देने पर तैयार नहीं थे उन्होंने वायसराय को पत्र लिखा और कहा कि दलित वर्ग को अलग से आरक्षण देकर आप देश के साथ बहुत अन्याय करेंगे और गांधी जी ने इस निर्णय के विरुद्ध आमरण अनशन शुरू कर दिया जब अछूतों के पृथक निर्वाचन क्षेत्र को लेकर गांधी जी ने आमरण अनशन आरंभ किया तो पूरे देश में खलबली मच गई तब कांग्रेसी नेता इस समस्या के ऊपर गहराई से वि करके उनका जीवन बचा लो अंबेडकर अंत में अंबेडकर जी ने कुछ शर्तों के साथ गांधीजी से समझौता कर लिया इस समझौते को **पुणे एक्ट** के नाम से जाना जाता है

विश्व में सबसे ज्यादा समानता पर आधारित संविधान के शिल्पकार, नारी वर्ग के उदारक, ज्ञान के प्रतिक,सामाजिक एवं शैक्षणिक क्रांति के अग्रदूत, शोिषत - अपेक्षित समाज के मसीहा, उच्च कोटि के अर्थशास्त्री i, महान विधिवेता, शिक्षाविद, स्वतंत्र भारत के प्रथम कानून मंत्री के रूप डॉ भीमराव अंबेडकर को जाना जाता है, इन्हें महिला अधिकारों के जनक, भारत में पावर ग्रिड प्रोजेक्ट के जनक, काम का समय 12-14 घंटे घटकर 8 घंटे करने वाले, आंदोलन करने का अधिकार दिलाने वाले, मेडिकल लीव और मैटरनिटी लीव दिलवाने वाले, किसानों को इंटरेस्ट फ्री लोन दिलाने वाले, मिनिमम लेबर निर्धारित करने वाले, मेडिकल लीव और मैटरनिटी लीव दिलाने वाले बाबा साहब भीमराव अंबेडकर को 1990 में भारत रत्न से नवाजा गया

डॉ भीमराव अंबेडकर का प्रभाव जितना भारत देश में है, उतना ही विदेशों में भी है 15 अक्टूबर 2023 को बरॉक ओबामा ने अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर में स्ट्रीट का नाम बी आर अंबेडकर रखा है और उसके साथ ही सबसे बड़ी प्रतिमा का अनावरण भी किया जो की 19 फीट की मूर्ति है, इसे **स्टैचू आफ इक्वलिटी** के नाम से जाना जाता है और बराक ओबामा ने डॉ भीमराव अंबेडकर को **सिंबल ऑफ नॉलेज** कहा था

संदर्भ ग्रंथ

1 **अंबेडकरी आंदोलन- जितेंद्र कुमार गौरव, 2005**

*2.***बौद्ध धर्म और हिंदू धर्म से कैसे और क्यों भिन्न- शंकारानंद शास्त्री,2010 3.बाबासाहेब और भंगी जातियां- भगवान दास, 2007**

4. https://youtu.be/vpi4-X0z3nE?si=qTmIGgFQa-gwmVnU

5. https://youtube.com/watch?v=QVGb-qBmTV0&si=3H_7l_0-TF_Qtjkb.